# देशी रियासतों का विलय और सरदार वल्लभ भाई पटेल

**वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय**

से इतिहास विषय में पी० एच० डी० हेतु प्रस्तुत

**शोध - प्रारूप**

**2024**

शोध निर्देशक
—————

शोधार्थी
रंजन कुमार
क्रमांक-07

प्रो० डॉक्टर
**दीपक प्रकाश वर्धन**
अध्यक्ष
इतिहास विभाग
**वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय**
**आरा**

## शोध परिचय :-

देशी रियासतें भारतीय उपमहाद्वीप के एक विशेष प्रकार के प्रशासनिक क्षेत्र थीं जो ब्रिटिश राज के तहत स्वतंत्र रूप से शासित होती थीं, हालांकि इनका प्रशासन ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में था। भारत के विभाजन के समय, कुल लगभग 565 रियासतें अस्तित्व में थीं। इन रियासतों का शासक भारतीय राजा या नवाब होता था, जबकि ब्रिटिश राज के तहत ये रियासतें अपनी संप्रभुता में एक हद तक स्वतंत्र थीं, लेकिन बाहरी मामलों और रक्षा नीति में ब्रिटिश सरकार का नियंत्रण था। ब्रिटिश साम्राज्य और रियासतें :- ब्रिटिश साम्राज्य ने 19वीं सदी में भारत पर कब्जा करने के बाद, इन रियासतों को अपने शासन में शामिल किया, लेकिन उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया। इन रियासतों को ब्रिटिश शासक "सरकार की सहमति" से एक निश्चित स्तर तक स्वायत्तता दी गई थी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान रियासतों का कोई एक सटीक दृष्टिकोण नहीं था। कुछ शासक ब्रिटिश शासन के पक्ष में थे, जबकि कुछ ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया। कई रियासतें स्वतंत्रता संग्राम के बाद भी ब्रिटिश शासन से बाहर जाने के लिए तैयार नहीं थीं।

पटेल की भूमिका: जब भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ, तब देशी रियासतों को भारतीय संघ में शामिल करने की चुनौती खड़ी हुई।आंतरिक मामलों में संप्रभुता का दावा करने वाले इन रियासतों के शासकों से समझौता करना एक बड़ी चुनौती थी।आज़ादी के समय जब वे भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री एवं प्रथम गृहमंत्री बने तो उस समय देश में लगभग 565 रियासतें थीं , जिनका क्षेत्रफल 48 प्रतिशत एवं इनमें देश की 28 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी। इन रियासतों को देश में शामिल करना एक विकराल समस्या थी। आज़ादी के ठीक पूर्व ही सरदार पटेल ने वी पी मेनन के साथ मिलकर कई

देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिए कार्य आरंभ कर दिए थे।पटेल और मेनन ने देसी राज्यों को बहुत समझाया कि उन्हें स्वतंत्रता देना संभव नहीं होगा।इसके परिणामस्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी रजवाड़ों ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।केवल जम्मू एवं कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद स्टेट के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा।

जूनागढ़ सौराष्ट्र के पास एक छोटी रियासत थी और चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी।वहाँ के नवाब ने 15 अगस्त 1947 को पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी। राज्य की सर्वाधिक जनता हिंदू थी और भारत में विलय चाहती थी। नवाब के विरुद्ध बहुत विरोध हुआ तो भारतीय सेना जूनागढ़ में प्रवेश कर गयी। नवाब भागकर पाकिस्तान चला गया और 9 नवम्बर 1947 को जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। फ़रवरी 1948 में वहाँ जनमत संग्रह कराया गया, जो भारत में विलय के पक्ष में रहा।

हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत थी, जो चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी। वहाँ के निज़ाम ने पाकिस्तान के प्रोत्साहन से स्वतंत्र राज्य का दावा किया और अपनी सेना बढ़ाने लगा। वह ढेर सारा हथियार आयात करता रहा जिससे पटेल की चिंता बढ़ गई। अंततः सरदार पटेल के आदेश पर भारतीय सेना 13 सितंबर 1948 को हैदराबाद में प्रवेश कर गयी। तीन दिनों के बाद निज़ाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और नवम्बर 1948 में भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

जम्मू और कश्मीर राज्य पर महाराजा हरि सिंह का शासन था, जो एक हिंदू थे, हालाँकि राज्य में मुस्लिम बहुमत था। महाराजा की सेना द्वारा पुँछ की मुस्लिम आबादी पर अत्याचारों की अफ़वाहें पाकिस्तान में फैल गईं। इसके तुरंत बाद , पाकिस्तान के उतर-पश्चिम सीमांत प्रांत से पठान आदिवासी सीमा पार कर कश्मीर में प्रवेश कर गई। आक्रमणकारियों ने श्रीनगर की ओर तेज़ी से

कूच किया। तब कश्मीर के महाराजा ने भारत को पत्र लिखकर सैन्य सहायता माँगी। भारत ने विलय के एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने और बदले में शेख़ अब्दुल्ला के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार स्थापित करने की माँग की, महाराजा ने इसका पालन किया। अंततः 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान कश्मीर में लागू हुआ।

इस दुष्कर कार्य को रक्तहीन क्रांति के माध्यम से सफलता पूर्वक अखंड भारत का निर्माण कर वे 'भारत के बिस्मार्क' कहलाये। पर वास्तविकता में शायद ही कोई ऐसी शख़्सियत हुआ जिसने इतने सारे रियासतों को एक कर एक अखंड देश का निर्माण किया।

## ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :-

भारत में ब्रिटिश विस्तार के शुरुआती इतिहास में मौजूदा रियासतों के प्रति दो दृष्टिकोणों का सह-अस्तित्व रहा।पहली थी विलय की नीति ,जहां अंग्रेजों ने भारतीय रियासतों को जबरन उन प्रांतों में समाहित करने की कोशिश की, जो भारत में उनके साम्राज्य का गठन करते थे ।दूसरी अप्रत्यक्ष शासन की नीति थी, जहां अंग्रेजों ने रियासतों पर सर्वोच्चता ग्रहण की, लेकिन उन्हें संप्रभुता और आंतरिक स्वशासन की अलग-अलग डिग्री प्रदान की । 19वीं सदी के शुरुआती भाग के दौरान, अंग्रेजों की नीति विलय की ओर अग्रसर थी, लेकिन 1857 के भारतीय विद्रोह ने इस दृष्टिकोण को बदलने के लिए मजबूर किया, जिसमें विलय किए गए राज्यों को अवशोषित करने और वश में करने की कठिनाई और समर्थन के स्त्रोत के रूप में रियासतों की उपयोगिता दोनों का प्रदर्शन किया गया। 1858 में, विलय की नीति को औपचारिक रूप से त्याग दिया गया था, और उसके बाद शेष रियासतों के साथ ब्रिटिश संबंध सहायक गठबंधनों पर आधारित थे , जिसके तहत अंग्रेजों ने सभी रियासतों पर सर्वोच्चता का प्रयोग किया, जिसमें ब्रिटिश ताज अंतिम अधिपति था, लेकिन साथ ही

साथ उन्हें सहयोगियों के रूप में सम्मान और सुरक्षा प्रदान की, उनके बाहरी संबंधों पर नियंत्रण रखा। ब्रिटिश और प्रत्येक रियासत के बीच सटीक संबंध व्यक्तिगत संधियों द्वारा विनियमित थे और व्यापक रूप से भिन्न थे, कुछ राज्यों में पूर्ण आंतरिक स्वशासन था, अन्य अपने आंतरिक मामलों में महत्वपूर्ण नियंत्रण के अधीन थे, और कुछ शासक वास्तव में थोड़ी स्वायत्तता के साथ भू-संपदा के मालिकों से थोड़ा अधिक थे।

20वीं शताब्दी के दौरान, अंग्रेजों ने रियासतों को ब्रिटिश भारत के साथ अधिक निकटता से एकीकृत करने के लिए कई प्रयास किए, 1921 में एक सलाहकार और परामर्श निकाय के रूप में चैंबर ऑफ़ प्रिंसेस का निर्माण किया, और 1936 में छोटे राज्यों की देखरेख की जिम्मेदारी प्रांतों से केंद्र को हस्तांतरित की और राजनीतिक एजेंटों को दरकिनार करते हुए भारत सरकार और बड़ी रियासतों के बीच सीधे संबंध बनाए। एक अधिक महत्वाकांक्षी उद्देश्य भारत सरकार अधिनियम 1935 में निहित महासंघ की एक योजना थी , जिसमें रियासतों और ब्रिटिश भारत को एक संघीय सरकार के तहत एकजुट करने की परिकल्पना की गई थी।यह योजना सफलता के क़रीब पहुंच गई थी, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के फैलने के परिणामस्वरूप 1939 में इसे छोड़ दिया गया । परिणामस्वरूप, 1940 के दशक में रियासतों और ताज के बीच संबंध सर्वोच्चता के सिद्धांत और ब्रिटिश ताज और राज्यों के बीच विभिन्न संधियों द्वारा विनियमित रहे।

भारतीय स्वतंत्रता के बाद न तो सर्वोच्चता और न ही सहायक गठबंधन जारी रह सके।अंग्रेजों का मानना था कि चूँकि वे सीधे ब्रिटिश ताज और रियासतों के बीच स्थापित किए गए थे, इसलिए उन्हें भारत और पाकिस्तान के नए स्वतंत्र प्रभुत्व में स्थानांतरित नहीं किया जा सकता था । साथ ही, गठबंधनों ने ब्रिटेन पर ऐसे दायित्व थोपे जिन्हें वह जारी रखने के लिए तैयार नहीं था, जैसे कि

रियासतों की रक्षा के लिए भारत में सेना बनाए रखने का दायित्व। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने फैसला किया कि सर्वोच्चता, उनके और रियासतों के बीच सभी संधियों के साथ, भारत से ब्रिटिश के जाने पर समाप्त हो जाएगी।

## साहित्यिक पुनरावलोकन :—

**=> डीथ्रॉनड: पटेल,मेनन एंड दी इंटिग्रेशन ऑफ़ प्रिंसली इंडिया :-** जॉन ज़ुबर्शकी (2023)

इस पुस्तक के माध्यम से भारत के रियासतों का संघ में सम्मिलित करने में सरदार पटेल एवं वी० पी० मेनन की भूमिका पर चर्चा की है। इसमें उनके द्वारा सामना किए गए चुनौतियों,संघर्षों एवं विवादों का बड़ा ही रोचक चित्रण किया गया हैं। लेखक ने ‘स्टैंडस्टिल-एग्रीमेंट’ और ‘ऑपरेशन पोलो’ की बखूबी चर्चा करते हैं ।

**=> द मैन हु सेव्ड इंडिया** :- हिंडोल सेनगुप्ता (2018) ने इस पुस्तक में सरदार पटेल के व्यक्तित्व पर एक विस्तृत चर्चा करते हुए उन्हें एक अच्छा प्रधानमंत्री होने की कल्पना करते हैं और इस परिप्रेक्ष्य में वे उनके कम बोलने वाले और दृढ़ प्रतिज्ञ स्वभाव पर प्रकाश डालते हैं।इसमें लेखक ने आगे नेहरू और पटेल की तुलना करते हुए उनके व्यापार योजना पर भी चर्चा करते हैं, एवं नेहरू को स्वप्न में डूबे हुए एवं कोरी कल्पना करने वाले व्यक्तित्व की बात स्वीकारते हैं।ये हर मामले में पटेल को नेहरू से ठोस व्यक्तित्व वाला व्यक्ति मानते हैं।लेखक ने रियासतों के विलय पर भी चर्चा करते हुए दोनों की तुलना की हैं।ये कृति अपने आप में अनुपम है।

**=> सरदार बल्लभ भाई पटेल चाणक्य ऑफ़ मॉडर्न इंडिया :-** शेषराव चव्हाण (2017) ने अपनी इस पुस्तक में सरदार पटेल की नेतृत्व की भूमिका का बड़ी चतुराई पूर्वक वर्णन किया हैं। इसको

तीन भागो में बाँटकर लेखक ने स्वतंत्रता के पहले एवं उसके बाद के पृष्ठभूमि पर पटेल की नेतृत्व वाली भूमिका पर ख़ासा ध्यान दिया हैं।विशेष रूप से इस पुस्तक में जम्मू एवं कश्मीर , हैदराबाद एवं जूनागढ़ पर चर्चा की गई हैं इसके अलावा गाँधी जी का यू-टर्न और भारत-पाकिस्तान अलगाव पर पटेल की दृष्टिकोण पर भी विस्तृत चर्चा की गई हैं।

**=> पटेल ए लाइफ :-** राजमोहन गाँधी (1991) जो कि गाँधी जी के पौत्र है ने अपनी इस पुस्तक में लिखते हैं कि:— "आज़ाद भारत ने अपनी वैधता और शक्ति मोटे तौर पर तीन व्यक्तियों के कड़े परिश्रम से प्राप्त की है:- गाँधी, नेहरू और पटेल। जबकि इसका आभार नेहरू के प्रति पूरा-पूरा है और गाँधी के मामले में कर्तव्यबोधक हैं, परंतु पटेल के मामले में यह बहुत ही अल्प हैं।" यह एक ऐसी कृति है जिसमें पहली बार पटेल के जीवन की पूरी कहानी बताती है, वह हलवाहा जिसने भारत को आज़ाद कराने में मदद की और फिर 1947-49 में उसे एक राष्ट्र में मिला दिया। राजमोहन गाँधी जी ने कुछ अनछुए पहलुओं को भी उजागर किया है।

**=> द स्टोरी ऑफ़ द इंटिग्रेशन ऑफ़ द इण्डियन स्टेट्स :-** वी० पी० मेनन (1956) द्वारा रचित यह पुस्तक अब तक का सबसे विश्वसनीय एवं सटीक स्त्रोतों वाला माना गया है । इसमें इन्होंने बड़ी ही बारीकी से कहानी के माध्यम से एक संघ के निर्माण की चर्चा की है। इन्होंने रियासतों को भारत में मिलाने में अविश्वसनीय दिये थे क्योंकि उस समय ये सरदार पटेल के सचिव थे। एक बार तो विलय के क्रम में जोधपुर के राजा ने इन पर बंदूक़ तान दी थी फिर भी ये बिना घबराये बड़ी विनम्रतापूर्वक उस हालत को सँभाले एवं वहाँ के राजा को विलय पत्र पर साइन करने को राज़ी कर लिये।इनकी यह कृति अनुपम है।

## अनुसंधान अंतराल :-

सरदार बल्लभ भाई पटेल एवं राष्ट्रीय एकीकरण में उनके योगदान पर असंख्य लेखों और पुस्तक उपलब्ध हैं , पर जब इन अधिकतम स्त्रोतों का सूक्ष्म अवलोकन किया जाता है तो उसमें से अधिकतम में स्त्रोतों का परिसीमन एवं लेखक के पूर्वाग्रह के कारण कुछ कमियाँ पाईं जाती हैं। बहुत सारे छोटे रियासतों जैसे ध्रोल राज्य, गढ़ा राज्य, रामपुर रियासत, कुचबिहार राज्य, डुमरांव, गिद्धौर, खरसावाँ इत्यादि रियासतों  पर कुछ ख़ास नहीं मिलता। बहुत सारी रचनाओं में तो सिर्फ़ जम्मू एवं कश्मीर , जूनागढ़ और हैदराबाद की ही चर्चा हैं, बाक़ी बचे हुए रियासतों एवं पटेल जी के योगदान की चर्चा लगभग नगण्य ही हैं।

## शोध उद्देश्य :-

**=>** राष्ट्रीय एकीकरण में सरदार बल्लभ भाई पटेल के योगदान को उजागर करना।

**=>** स्वतंत्रता प्राप्ति के समय विभिन्न रियासतों को भारत में समाहित करने में आने वाले चुनौतियों और समस्याओं को उजागर करना।

**=>** आज़ादी के समय देसी रियासतों की स्तिथि एवं भविष्य में उनसे होने वाले नुक़सान को उद्घाटित करना।

**=>** देसी रियासतों को एक अखंड भारत में समाहित कर उन्हें एक गणतांत्रिक देश का अंग बनाने में आने वाले कठिनाइयों एवं उनसे पार पाने में सफलता के रहस्यों को प्रकाश में लाना।

**=>** रियासतों के राजाओं एवं राजकुमारों को प्रिवी पर्स के माध्यम से भारत में उनके राज्यों

के विलय के लिए कैसे मनाया गया एवं ज़रूरत के अनुसार सरदार पटेल की **पुरस्कार एवं दंड की नीति** को जन सामान्य के समक्ष प्रकट करना।

## शोध का महत्व :-

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश में विद्यमान लगभग 562 रियासतों का विलय किया गया जिनमें सरदार बल्लभ भाई पटेल , वी० पी० मेनन एवं लार्ड माउण्टबेटन का योगदान रहा।इनमें से कुछ महत्वपूर्ण रियासतों जैसे - जम्मू एवं कश्मीर, हैदराबाद, जूनागढ़, भोपाल, जयपुर तथा त्रावंकोर आदि प्रमुख रियासतों के विलय की कहानी हर जगह विद्यमान हैं। पर अधिकतम छोटे- बड़े एवं महत्वपूर्ण पूर्वी-भारत के राज्यों की चर्चा नगण्य हैं। अतः मेरे इस शोध का महत्त्व होगा कि — देश के हर छोटे - बड़े एवं महत्वपूर्ण रियासतों को मिलाकर राष्ट्रीय एकीकरण को अंजाम देने में सरदार बल्लभ भाई पटेल के योगदान को जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करना। इन रियासतों की स्तिथि एवं उनका विलय कैसे तथा किन राज्यों में हुआ इन सभी पहलुओं को दृष्टिपात कर लोगों के समक्ष प्रकट करना।

## अनुसंधान पद्धति :—

**शोध विधि :—** प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित हैं।

**तथ्य संकलन स्रोत:—** प्रस्तुत शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित हैं । प्राथमिक स्रोतों में सरदार बल्लभ भाई पटेल के लेख एवं

अभिभाषण तथा राज्यों अथवा रियासतों के दस्तावेज़ों का प्रयोग किया जाएगा।

द्वितीयक स्त्रोतों में पुस्तकों , पत्रिकाओं ,सरकारी दस्तावेज़ों तथा अन्य प्रकाशित एवं अप्रकाशित दस्तावेज़ों और इंटरनेट , वेबसाइट आदि को तथ्य संकलन हेतु द्वितीयक स्त्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा।

## अध्यायीकरण :—

**प्रथम अध्याय :- प्रस्तावना**

**द्वितीय अध्याय :- देशी रियासतों का इतिहास ।**

**तृतीय अध्याय :- उत्तर भारत के रियासतों का भारत संघ में एकीकरण।**

**चतुर्थ अध्याय :- दक्षिण भारत के राज्यों को देश में समाहित करना।**

**पंचम अध्याय :- पश्चिमी भारत के राजा-रजवाड़ों को भारतीय संघ में शामिल करना।**

**षष्ठम् अध्याय :- पूर्वी भारत के राज्यों का विलय।**

**सप्तम अध्याय :- मध्य भारत के रियासतों का विलय।**

**अष्टम अध्याय :-  सरदार वल्लभ भाई पटेल का व्यक्तित्व और देन।**

**नवम अध्याय :-   उपसंहार ।**

## संदर्भ ग्रंथ :—

### प्राथमिक स्त्रोत :—


=> भारत की एकता का निर्माण : सरदार बल्लभ भाई पटेल का कलकत्ता में भाषण ।
3 जनवरी 1948.

=> सरदार पटेल का बंबई चौपटी का अभिभाषण 17 जनवरी 1948 .

=> बल्लभ भाई पटेल का शिवाजी पार्क , बंबई का भाषण 18 जनवरी 1948 .

=> बिल्ड ए स्ट्राँग इंडिया : पटेल जी का द्वीप मैदान मद्रास में भाषण । 23 फ़रवरी 1949.

=> 34 महत्वपूर्ण रियासतों का दस्तावेज़ । कोलंबिया रेयर बुक एंड मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी।

=> इसके अलावा अहमदाबाद आर्काइव एवं न्यू दिल्ली स्थित सेंट्रल लाइब्रेरी का इस्तेमाल किया जाएगा।


### द्वितीयक स्त्रोत :—


=> वी० पी०मेनन , द स्टोरी ऑफ़ द इंटिग्रेशन ऑफ़ द इण्डियन स्टेटस, ओरिएंट लौंगमैंस लिमिटेड चितरंजन एवेन्यू कलकत्ता (1956)

=> राजमोहन गाँधी, पटेल ए लाइफ ,नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद (1991)

=> शेषराव चव्हाण , सरदार बल्लभ भाई पटेल चाणक्य ऑफ़ मॉडर्न इंडिया , अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स दिल्ली (2017)

=> हिंडोल सेनगुप्ता , द मैन हु सेव्ड इंडिया , पेंगुइन वाइकिंग पब्लिशर्स न्यू वर्क सिटी अमेरिका (2018)

=> जॉन ज़ुबर्शकी , डीथ्रॉनड: पटेल,मेनन एंड दी इंटिग्रेशन ऑफ़ प्रिंसली इंडिया, जागरनॉट पब्लिशर्स न्यू दिल्ली (2023)

=> वी० पी० मेनन , द ट्रांसफ़र ऑफ़ पॉवर इन इंडिया 1945-47, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस प्रिंसटन अमेरिका (1957)